शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४१ : नई दिल्ली : १५-२१ जनवरी २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में सानंद विचरण करते हुए लावा सरदारगढ़ में वर्धमान महोत्सव करने के पश्चात् १४८वें मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट पधार गए हैं। साधु-साध्वियों के कई सिंघाड़ों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर लिए हैं और अनेक निर्दिष्ट सिंघाड़े गुरुदिशा में गतिमान हैं। आमेट के श्रद्धालु मर्यादा महोत्सव की व्यवस्थाओं में उत्साह के साथ जुटे हुए हैं। आगन्तुक दर्शनार्थियों के लिए यहां माकूल व्यवस्थाएं की गई हैं।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव : विशिष्ट शुभकामनाएं

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर अनेक विशिष्ट व्यक्तियों की शुभकामनाएं प्राप्त हो रही हैं। कुछ पत्र यहां प्रस्तुत हैं–

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण एवं धर्मसंघ के अनुयायियों से अलौकिक अभिवादन।

धर्मसंघ के दशम महान् युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ अपनी ऐतिहासिक साधना तथा विपुल प्रज्ञा के लिए विख्यात हैं। सर्वप्रथम हम उन्हें आचार्य महाश्रमण को धर्मसंघ के आचार्य नियुक्त करने के लिए बधाई देते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञजी महान् संत थे, जिन्होंने अज्ञान, अशिक्षा और निर्धनता को दूर करने तथा समाज में नैतिकता, शान्ति, सौहार्द और अहिंसा को स्थापित करने के लिए संन्यास ग्रहण किया। आचार्य महाप्रज्ञजी की मौलिक सोच 'फ्यूरेक' के माध्यम से हम लोग काफी समीप आए, सर्वधर्मों की गरिमा के लिए मिलजुलकर कार्य किया। आचार्यश्री का निर्मल समरूप स्नेह, उनकी अलौकिक अनुकम्पा तथा समकालीन समाज को प्रभावित करने की कला के कारण हम उनके व्यक्तित्व को पसन्द करते हैं। आचार्यश्रीजी ने वैज्ञानिक व सुनियोजित ढंग से ''प्रेक्षाध्यान'' का सूत्रपात किया। शिक्षा के क्षेत्र में "जीवन विज्ञान" आपकी चिरस्थायी उपलब्धि है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए मूल्यपरक तथा नैतिक शिक्षा का अभियान है।

आचार्य महाश्रमणजी ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों की राह पर चलकर प्रचुर अनुभव और आचार्य की योग्यता हासिल की है और इसीलिए उनका तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता के रूप में बहुत ही सही चयन किया गया है।

आचार्य पदाभिषेक के बाद कई बार चाहते हुए भी दोनों ओर कोई न कोई ऐसे कारण बनते रहे कि हम अभी तक मिल नहीं पाए हैं। तथापि हम आचार्य महाश्रमणजी की सभी गतिविधियों के सतत सम्पर्क में हैं।

आचार्यश्री तुलसीजी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी जैसे महान् पूर्वाचार्यों ने जो गतिविधियां प्रारंभ की थी, उनके साथ आगे बढ़ते हुए वर्तमान आचार्यश्री अभिनव तरीके से समाज को नेतृत्व और दिशानिर्देशन दे रहे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञजी के जीवनकाल में अहिंसा यात्रा का प्रभावी ढंग से शुभारंभ हुआ और वह देश के कई हिस्सों में पहुंची। महान् पूर्वज आचार्य की विरासत को वर्तमान आचार्यश्री अपने शिष्य समुदाय तथा अनुयायियों के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी को कर्णाटक पधारने के लिए निवेदन किया था, किन्तु समय और दूरी की बाधाओं के कारण ऐसा संभव न हो पाया। हम वर्तमान आचार्यजी से आशा करते हैं कि यहां के लाखों अनुयायियों की आशा पूर्ण कर पूरे समाज को लाभान्वित करेंगे।

हमें जानकारी प्राप्त हुई कि लाखों अनुयायियों के द्वारा आचार्य महाश्रमणजी की ५०वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष में अमृत महोत्सव का आयोजन हो रहा है। आचार्यजी के अनुयायियों ने हमें इस मंगलमय अवसर पर

उपस्थित होने का निमन्त्रण दिया, किन्तु शारीरिक अस्वस्थता के कारण हम वहां उपस्थित होकर इस पावन अवसर के साक्षी बनने में असमर्थ हैं।

आचार्यश्री के कार्यकलाप और गतिविधियां उनके समन्दर जितने अथाह ज्ञान, बौद्धिकता, प्रतिभा सम्पन्नता, सूक्ष्म दृष्टि और दूरदर्शिता को प्रदर्शित करते हैं। सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होने के बावजूद उनका दृष्टिकोण उदार और निरपेक्ष है। अपने पूर्वाचार्यों की भांति ही आचार्य महाश्रमणजी अहिंसा, नैतिक मूल्यों और शाश्वत सिद्धांतों को प्रोत्साहन दे रहे हैं।

हम कामना करते हैं कि वे आध्यात्मिक ऊंचाइयों को छूएं तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आचार्य महाश्रमण को ऐसा उदार आशीर्वाद प्रदान करें कि वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हों।

आपका ईश्वर भक्ति में
पद्मभूषण श्री श्री श्री डॉ. बालगंगाधरनाथ महास्वामी
अध्यक्ष, श्री आदिचुनचुनगिरी महासंस्थान मठ

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण के पचासवें जन्मदिन को जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा वर्ष भर अमृत महोत्सव के रूप में आयोजित कर रही है।

पूज्य आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की विरासत एवं परम्परा को आचार्य महाश्रमण पूर्ण समर्पण और निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

यह जानकर आनंदानुभूति हुई कि आचार्य महाश्रमण अहिंसा, नैतिक मूल्य और सिद्धान्तों को अपने प्रवचन और वक्तव्य के द्वारा प्रतिष्ठापित कर रहे हैं। उनकी राष्ट्रव्यापी पदयात्रा शान्ति और अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए आन्दोलन का रूप ले चुकी है।

मैं इस आनंददायक अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण को बधाई देता हूं और महासभा को अमृत महोत्सव के आयोजन की महान सफलता के लिए शुभकामना प्रेषित करता हूं।

के. शंकर नारायणन
राज्यपाल, महाराष्ट्र

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युवामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन के ५०वें वर्ष के पावन अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा 'अमृत महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है।

मानवीय मूल्यों के विकास, ज्ञान, दर्शन और चरित्र निर्माण में तेरापंथ धर्मसंघ तथा अणुव्रत आन्दोलन एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अहिंसा यात्रा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

इसी परम्परा में आचार्यश्री महाश्रमणजी सर्वधर्म समभाव, अहिंसा, शांति, सदाचार को व्यापक बनाने के साथ रूढ़ियों एवं सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के लिए समर्पित भावना के साथ प्रयासरत हैं।

अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं महाश्रमणजी को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उनके ५०वें वर्ष में प्रवेश पर बधाई देता हूं और इस आयोजन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन, शान्त और सौम्य आभामण्डल के साथ अमृत-वय में प्रवेश किया है। तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के पट्टधर अपनी दीर्घकालीन अहिंसा-यात्रा के दौरान

जीवन में रूपान्तरण घटित करने की प्रेरणा दे रहे हैं। आपके विचारों और अमृत-वचनों को सुदूरवर्ती आदिवासी क्षेत्रों में भी आमजन श्रवण करते हैं, श्रद्धा करते हैं और उसके अनुरूप आचरण भी करते हैं।

आप एक आदर्श योगी ही नहीं, प्रभावशाली वक्तव्य शैली के धनी भी हैं और ऐसे साहित्य का सृजन करते हैं जो जीवनशैली को सुधारने के साथ-साथ जीवन की समस्याओं के समाधान करने में भी सहायक होता है।

मुझे इस बात की असीम प्रसन्नता है कि इस अवसर पर अमृत महोत्सव का आयोजन हो रहा है। इस पुनीत प्रसंग पर आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज को मेरा भावभरा वन्दन, नमन।

नरेन्द्र मोदी
मुख्यमंत्री, गुजरात

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी का पचासवां जन्मदिन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा अमृत महोत्सव के रूप में वर्ष भर आयोजित कर रही है।

जैन धर्म एक ऐसा धर्म है, जो भारत से प्रारब्ध होकर पूरे विश्व में सभी श्रद्धालुओं को शान्ति, प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाता है। भारत को यह गर्व है कि यहां से सर्वाधिक धर्म उद्भूत हुए और समाज की उन्नति के लिए वे विश्वव्यापी बन गए। भारत में सर्वाधिक सम्प्रदाय, पवित्र स्थल, मंदिर और धार्मिक स्थल हैं, जिनके असंख्य श्रद्धालु मैत्रीपूर्ण और साम्प्रदायिक सौहार्दपूर्ण वातावरण में रहते हैं।

परम पावन आचार्य महाश्रमणजी जैन धर्म के असाम्प्रदायिक और उदार विचारों वाले गुरु हैं। उनका अहिंसा, नैतिक मूल्य एवं मानवीय एकता के उन्नयन का संकल्प स्तुत्य और समाज के व्यापक हित में है।

मैं आशा करता हूं कि आचार्यजी सब पर आशीर्वाद बरसाते रहेंगे। जिससे प्रत्येक व्यक्ति का जीवन सफल हो सकेगा और यह पृथ्वी सुरक्षित जीवन और प्रगति का स्थान बन सकेगी।

जन्मदिवस के महान् उत्सव के लिए मेरी शुभकामनाएं।

प्रेमकुमार धूमल
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

कुन्दवा का कण-कण पुलकित

३ जनवरी। परम पावन आचार्यवर प्रातः मदारिया से कुन्दवा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती राणेला की पाल पर स्थित दक, पोखरना, चिपड़, कोठारी, मेहता, भण्डारी (जालौड़ा) आदि परिवारों की सती माताओं के स्थान पर आचार्यवर ने मंगलपाठ का उच्चारण किया। दक परिवार द्वारा निर्मित धर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम में पूज्यवर ने जनता को वीतराग भक्ति और वीतरागता के विकास की प्रेरणा प्रदान की। मध्यवर्ती कणवेरा गांव के रावला में आचार्यवर का पदार्पण हुआ। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने शराब, बीड़ी, तम्बाकू आदि के परिसेवन का परित्याग किया। कुल ९.९ कि.मी. का विहार करते हुए पूज्यवर कुन्दवा पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से कुन्दवा का कण-कण पुलकित था। चारों और अलौकिक वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। आचार्यप्रवर का प्रवास स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद, श्री माणकचन्द कोठारी और श्री शान्तिलाल बाबेल ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में भाव-सुमन अर्पित किए। स्थानीय तेरापंथ समाज की निर्देशिका पूज्यवर को उपहृत की गई। साध्वी सरोजकुमारीजी (मुम्बई) आदि साध्वियों ने प्रथम बार आचार्यवर के दर्शन किए। कार्यक्रम में साध्वी सरोजकुमारीजी और सहवर्ती साध्वी चन्द्रलेखाजी ने अपने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त किए। साध्वियों ने एक गीत का भी संगान किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'धर्म के दो प्रकार हैं संवर धर्म और निर्जरा धर्म। संवर धर्म द्वारा भावी दुःखों का निरोध और निर्जरा धर्म के द्वारा पूर्वकृत कर्मों का विनाश होता है। इन दोनों प्रकारों में धर्म का पूर्णतया समावेश हो जाता है। यह दुर्लभ मनुष्य जन्म क्षण-क्षण बीतता जा रहा है। संवर और तप की साधना के द्वारा इसे सुफल बनाया जा सकता है। भवसागर को तरने हेतु राग-द्वेष को छोड़ना होगा। कषाय को प्रतनु करने का प्रयास हो तो व्यक्ति वीतरागता कि दिशा में गति कर सकता है। हम तो जिनशासन रूपी जहाज में बैठे हैं। विश्वास है कि यह जहाज हमें भवसागर से पार पहुंचा देगा। इसके लिए संवर और तप की साधना परिपुष्ट बनाएं।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'साध्वी सरोजकुमारीजी (मुम्बई) आदि साध्वियां परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद पहली बार पहुंची हैं। इनका सिंघाड़ा हमारे धर्मसंघ का स्तरीय सिंघाड़ा है। चाड़वास मर्यादा महोत्सव की व्यवस्था के दौरान हैदराबाद चतुर्मास की घोषणा छूट गई थी। फिर साध्वी सरोजकुमारीजी को चतुर्मास के लिए वहां भेजा गया। साध्वियां उपकरण, रजोहरण आदि काफी भेंटे लाई हैं। यह भेंट अच्छी हैं, किन्तु साथ में एक दीक्षार्थी भी लाकर खड़ा करें। दीक्षार्थी की भेंट तो साधु-साध्वियां दोनों लाएं। सभी साध्वियां खूब अच्छा कार्य करती रहें।'

कुन्दवा में तेरापंथ समाज के ३१ घर हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त आचार्यवर का सभी घरों में पदार्पण हुआ। श्रद्धालुओं ने आचार्यवर की उपासना के दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए। अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प अभिव्यक्त किया।

पारडी में पावन पदार्पण

४ जनवरी। परम पूज्य आचार्यवर प्रातः कुन्दवा से ४.३ कि.मी. का विहार कर पारडी पधारे। शान्तिदूत आचार्यवर को अपने गांव में देखकर पारडी का आलाबवृद्ध अत्यन्त प्रफुल्लित थे। श्रद्धालुओं की प्रसन्न मुखाकृति पर उनके भीतर उमड़ता हुआ श्रद्धा का ज्वार मुखरित हो रहा था। आचार्यवर का प्रवास श्री मोहनलाल इन्टोदिया परिवार के निवास पर हुआ। पूज्यप्रवर के प्रवास का सौभाग्य प्राप्त कर पूरा परिवार प्रसन्नता के सागर में गोते लगा रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात श्री शंकरलाल इन्टोदिया और श्री मूलचंद लोढा ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में भावाभिव्यक्ति दी। महन्त प्रह्लादप्रसादजी ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। डॉ महेन्द्र कर्णावट ने आचार्यप्रवर की मेवाड़ यात्रा के विषय में विचार अभिव्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणास्पद अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'यम (महाव्रत) की साधना बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। जीवन में यदि अहिंसा, सत्य आदि महाव्रत आ जाए तो मानना चाहिए उस व्यक्ति का कल्याण निश्चित है। भौतिक सिद्धियां और उपलब्धियां महाव्रतों की साधना के सामने तुच्छ और गौण हैं। यह साधना अपने आप में महायज्ञ है। पांच महाव्रतों में दूसरा है सत्य। व्यक्ति यथासम्भव मृषावाद से बचने का अभ्यास करे। सत्य और मधुर भाषा का प्रयोग करे। छलना से बचे। यह एक अच्छी साधना है। यह साधना तो गृहस्थों में भी यथासंभव रहनी चाहिए। इसके लिए कष्टों को झेलने की भी निष्ठा जागे। थोड़े कष्ट भले मंजूर कर लें, पर सत्य को न छोड़ें। व्यवसाय में यथासंभव सच्चाई का प्रयोग हो, मिलावट और दिखाना कुछ और देना कुछ आदि धोखा है। इससे बचने का प्रयास करें।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भावना रखनी चाहिए। मैत्री के दो अर्थ हैं सभी प्राणियों का हित चिन्तन और किसी के प्रति द्वेष भाव नहीं रखना। कुछ व्यक्तियों से मित्रता करना एक बात है, किन्तु सभी प्राणियों से मित्रता करना धर्म है। दूसरों का धार्मिक कार्यों में सहयोग करना, चित्तसमाधि पहुंचाना और पीड़ा न पहुंचाना धर्म है, आत्मोत्थान का मार्ग है।

पारडी में ७ तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के उपरान्त पूज्यप्रवर ने सभी श्रद्धालुओं के घरों और रावले में चरण स्पर्श किए। इस दौरान आचार्यवर ने स्थानीय तेरापंथ भवन में कुछ क्षण विराजमान होकर

'प्रभो! यह तेरापंथ महान...' गीत का संगान किया। मध्याह्न और रात्रि में श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर की उपासना का अवसर भी प्राप्त हुआ। लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए। श्री कन्हैयालाल इन्टोदिया ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। पूज्यवर का रात्रिकालीन अर्हत् वंदना के दौरान डॉ. सुन्दरलाल इन्टोदिया के निवास पर विराजना हुआ।

गुरु से आगे

पारड़ी के प्रातःकालीन कार्यक्रम में डॉ. सुन्दरलाल इन्टोदिया ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए निवेदन किया '२७ वर्षों पूर्व गुरुदेव तुलसी पारड़ी पधारे थे और यहां तीन कार्यक्रम किए थे। प्रभो! आप भी यहां तीन कार्यक्रम करने की कृपा कराएं'

आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में इस कथन का उल्लेख करते हुए कहा--'जैसा बताया गया कि परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने यहां तीन कार्यक्रम किए थे। हर बात में गुरुदेव की बराबरी कर सकें अथवा नहीं। होना तो यह चाहिए कि गुरु से भी आगे बढ़ें। गुरुओं का ऐसा साया और वरदहस्त रहे कि शिष्य गुरु से भी आगे बढ़ जाए। यह गुरु के लिए भी विशेष बात होती है। जहां तक तीन कार्यक्रम की बात है तो एक कार्यक्रम अभी हो रहा है। मध्याह्न में दो बजे दूसरा कार्यक्रम चल सकेगा, जिसमें समणियों का वक्तव्य हो सकेगा। तत्पश्चात् तीन बजे तीसरा कार्यक्रम हमारे प्रवास स्थल पर सभी तेरापंथी परिवारों की उपासना का रखा जा रहा है और चौथा कार्यक्रम रात्रि में प्रायः होता ही है। इस प्रकार चार कार्यक्रम हो जाएगें।' श्रीमुख से चार कार्यक्रम की घोषणा पारड़ीवासियों के लिए 'सोने में सुहागा' कहावत को चरितार्थ करने वाली थी।

५ जनवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः पारड़ी से ऊमरी की ओर प्रस्थित हुए। पारड़ी के मार्गस्थ जैनेतर घरों में आचार्यवर का पदार्पण हुआ। विहार से पूर्व बूंदाबांदी होने से मौसम नया रूप लिए हुए था। विहार के दौरान बारिश की हल्की फुहारों ने मानों महातपस्वी आचार्यवर का अभिनंदन किया। मार्ग में आचार्यवर राजसमंद जिले से पुनः भीलवाड़ा जिले में पधारे। आचार्यप्रवर के विहार पथ में पीछे से आई बस के यात्रियों ने बताया कि यहां से लगभग एक कि.मी. पीछे की ओर, जहां से आचार्यवर कुछ मिनटों पूर्व ही पधारे, अभी एक पैंथर हमारी बस के आगे से निकला।

मेवाड़ के इस बीहड पथ पर शान्तिदूत आचार्यवर ६.४ कि.मी. का विहार करते हुए ऊमरी पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से उल्लसित गांववासियों का जोश दर्शनीय था। तेरापंथ समाज ही नहीं, सम्पूर्ण गांव अत्यन्त प्रफुल्लित और प्रमुदित था। आचार्यवर का प्रवास श्री भेरूलाल नंगावत परिवार के निवास पर हुआ। अपने आराध्य का अपने प्राङ्गण में प्रवास नंगावत परिवार के लिए धन्यता की अनुभूति कराने वाला था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री लादूलाल नंगावत और ठाकुर श्री रधुनाथ सिंहजी ने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। मुनि कोमलकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा--'आज ऊमरी के लोगों में अतिशय प्रसन्नता है। ऐसा लग रहा है मानो उन्हें चिन्तामणि रत्न मिल गया है, कल्पतरु की छाया उपलब्ध हो गई है। पूज्य आचार्यवर का व्यक्तित्व अनुपमेय है। अनुपमेय व्यक्तित्व की उपासना अनुपमेय ही होनी चाहिए। ऐसा लगता है कि मेवाड़ के श्रावक समाज में गहरी श्रद्धा है। संघ और संघपति के प्रति श्रद्धा के साथ ज्ञान का भी संगम हो। श्रद्धा, ज्ञान और चरित्र का समन्वय हो तो व्यक्ति अपने लक्ष्य तक शीघ्र पहुंच सकता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधना के शिखर पर आरोहण करने के लिए असंग भाव (अनासक्ति) पर आरोहण करना होगा। यह एक ऐसा शस्त्र है, जिससे बंधन को तोड़ा जा सकता है। संसारी आत्मा के साथ ममत्व का संस्कार भी जुड़ा रहता है। यह ममत्व का संस्कार संग को परिपुष्ट बनाता है। व्यक्ति, पदार्थ और विषयों का बार-बार अनुचिन्तन करने से उनके प्रति आसक्ति बढ़ती है। व्यक्ति अनुचिन्तन करे कि एकमात्र आत्मा ही मेरी है, शेष सभी बाह्य संयोग है। इस प्रकार एकत्व भावना के द्वारा संग से निःसंग बनने की दिशा में प्रस्थान करे।' पूज्यप्रवर ने ऊमरी के मुनि कोमलकुमारजी को चित्तसमाधि में रहने का आशीर्वाद

प्रदान करते हुए साधना और सेवाभाव के विकास की प्रेरणा भी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री मिश्रीलाल नंगावत ने किया।

ऊमरी में तेरापंथ समाज के ३२ घर हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् सभी घरों में आचार्यवर का पदार्पण हुआ। स्थानीय तेरापंथ भवन और ओसवाल भवन भी पूज्यवर की चरणरज के स्पर्श से पावन बने। श्रद्धालुओं को आचार्यप्रवर की उपासना का अवसर भी संप्राप्त हुआ। आचार्यवर के निर्देशानुसार साध्वीप्रमुखाजी का आज का रात्रिकालीन प्रवास निकटवर्ती गांव कमेरी में रहा।

शासन का भार तो यहां है

ऊमरी प्रवास के दौरान मध्याह्न में पूज्यवर की सन्निधि में अनुशासन संहिता का वाचन हो रहा था। समुच्चय बोझ व्यवस्था के वाचन के दौरान प्रसंगवश आचार्यवर ने कहा--'मेरी तो आज भी इच्छा होती है कि मैं स्वयं कंधों पर वजन उठाकर चलूं। महामना आचार्य भिक्षु भी स्वयं उठाकर चलते थे तो मेरे क्या दिक्कत है?' आचार्यवर की बात को सुनकर साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया--'गुरुदेव, आपके कंधों पर तो संघ का भार है ही, आपश्री तो पूरे संघ को संभाल रहे हैं। आचार्यवर ने अपने मस्तिष्क की ओर संकेत करते हुए कहा--'शासन का भार तो यहां पर है। कंधों पर दूसरा बोझ लेने में क्या दिक्कत है?' महातपस्वी आचार्यवर की श्रमनिष्ठा को देखकर सभी साधु-साध्वियां नया संबोध प्राप्त कर रहे थे।

एक दिवस में देखे तीनों मौसम

६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यवर के ऊमरी से विहार के पूर्व बूंदाबांदी हुई। मौसम में हल्की वर्षा होने से वातावरण में नया रंग छा गया। आचार्यवर ने जब सरेवड़ी के लिए विहार किया, तब ठंडी हवा लोगों को ठिठुरने के लिए विवश कर रही थी और जब आचार्यप्रवर कमेरी और भींटा के श्रद्धालुओं की भावना को परितृप्ति प्रदान करते हुए सरेवड़ी की ओर गतिशील थे, तब सूर्य अपने तप्त तेज के साथ लोगों के दिलों में छाया की चाह उत्पन्न कर रहा था। सर्दी के मौसम में इतनी कड़ी धूप आश्चर्यजनक थी। किन्तु ये तीनों मौसम आचार्यप्रवर के समभाव को किंचित् भी विचलित करने में असमर्थ थे।

महातपस्वी आचार्यवर निराहार अवस्था में चिलचिलाती धूप के बीच दुरूह मार्ग से १५ कि.मी. की यात्रा कर लगभग १२ बजे सरेवड़ी के प्रवास स्थल में पधारे। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदना की। तत्पश्चात् अत्यल्प पेय आदि ग्रहण कर आचार्यवर लगभग सवा बारह बजे प्रवचन पंडाल में पधार गए। इतने लम्बे विहार के पश्चात् मात्र पन्द्रह मिनिट में पूज्यप्रवर का कार्यक्रम स्थल पर पधार जाना साधु-साध्वियों और जनता के लिए विस्मयकारी था। किन्तु भक्तवत्सल आचार्यवर के लिए मानों जनोद्धार ही विश्राम और पोषण है।

दस किलोमीटर का अतिरिक्त विहार

पूज्यप्रवर ने सरेवड़ी पधारने से पूर्व कमेरी और भींटा के लिए दस कि.मी. का अतिरिक्त विहार किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार सीधे मार्ग से ऊमरी से सरेवड़ी की दूरी मात्र पांच कि.मी. है। किन्तु आचार्यवर के लिए यह दूरी दस कि.मी. ज्यादा अर्थात् पन्द्रह कि.मी. की हो गई।

पूज्यप्रवर प्रातः ऊमरी से विहार कर कमेरी पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से ४५ चौकों में विभक्त यहां के ११ तेरापंथी परिवार आह्लादित थे। पूज्यप्रवर ने उनके घरों में चरण स्पर्श किया। तदुपरान्त विद्यालय में समायोजित कार्यक्रम में श्री हस्तीमल, श्री सम्पतलाल, श्री नेमीचन्द पितलिया आदि ने आचार्यवर के स्वागत में उद्गार व्यक्त किए। बहनों ने मंगलगीतों द्वारा अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। पूज्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में ग्रामीणों को पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प व्यक्त किया। उपस्थित विद्यार्थियों ने भी पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यप्रवर ने श्रद्धालुओं को उपासना करवाते हुए पावन संबोध प्रदान किया।

कमेरी से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर भींटा पधारे। यहां एक तेरापंथी परिवार सहित चार जैन परिवार हैं।

आचार्यप्रवर ने एकमात्र तेरापंथी श्री ललित ओस्तवाल परिवार के घर में विराजकर सेवा का अवसर प्रदान किया। १९९२ में परिवार की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती चन्द्राबाई ओस्तवाल की प्रेरणा से तेरापंथ की गुरुधारणा करने वाला यह परिवार आज अपने आराध्य को अपने आंगन में देखकर खुशियों से सराबोर था। विद्यालय में समायोजित कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को पूज्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। स्थानीय लोगों ने पूज्य चरणों में अपने भाव-सुमन अर्पित किए। पूज्यवर यहां के स्थानक और अन्य जैन घरों में भी पधारे।

भींटा से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर मार्गवर्ती चावत परिवार की सतीमाता के मन्दिर में मंगलपाठ का उच्चारण कर करीब बारह बजे सरेवड़ी पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से सरेवड़ी में सर्वत्र नई रौनक छाई हुई थी। श्रद्धालुओं की आन्तरिक भक्ति उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर मुखरित हो रही थी। आचार्यप्रवर का प्रवास श्री शान्तिलाल चावत परिवार के आवास पर हुआ। इस दुर्लभ सौभाग्य को प्राप्त कर चावत परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

संकल्प की दृढ़ता जागे

सरेवड़ी में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्री प्रेमचन्द चावत, श्री लोभचन्द चावत आदि श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। सहाड़ा क्षेत्र के विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। बैंगलोर से समागत श्री हीरालाल मालू ने भी अपने विचारों को प्रस्तुत किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणादायी संभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'प्राणी दुःखों से भयभीत रहता है। वह अपने ही प्रमाद के कारण दुःखी बनता है। सुख-दुःख का जिम्मेदार वह स्वयं होता है। दूसरे तो उसमें निमित्त हो सकते हैं। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की आराधना के द्वारा उस दुःख को दूर किया जा सकता है। किन्तु उसके लिए संकल्प की दृढ़ता जरूरी है। यदि संकल्प में दृढ़ता है तो कार्य सिद्धि तक पहुंच सकता है। व्यक्ति अपने दृढ़ संकल्प के द्वारा शाश्वत सुख की प्राप्ति का प्रयत्न करे।'

आचार्यप्रवर ने सरेवड़ी की साध्वियों का उल्लेख करते हुए कहा --'यहां की साध्वी झूमांजी ने छह बार छहमासी तप किया था। ऐसी तपस्याओं के विषय में सोचकर ही मन रोमांचित हो जाता है। मैं उन्हें बहुत सम्मान के साथ याद करता हूं। वर्तमान में साध्वी बिदामांजी यहां की है, अच्छे संस्कारों वाली साध्वी है। खूब अच्छी साधना करती रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सरेवड़ी में ३१ तेरापंथी परिवार हैं। उनके घर सायंकालीन आहार के उपरान्त पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। श्रद्धालुओं ने आचार्यप्रवर की उपासना के दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए। सरेवड़ी के चारों ओर स्थित हरे-भरे पहाड़ और यहां से दृष्टिगोचर होने वाला नाबरिया बांध का जल प्राकृतिक सुरम्यता को नयनों का विषय बना रहा था।

ऊबड़-खाबड़ पथ से आए वागड़

७ जनवरी। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः सरेवड़ी से वागड़ के लिए प्रस्थान किया। आज का पथ ऊबड़-खाबड़, आरोह-अवरोह से युक्त और घुमावदार था। किन्तु अहिंसा यात्रा का काफिला निरन्तर निर्बाध गतिमान रहा। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पर उछलकूद मचाती वानर सेना राहगीरों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी। मार्गवर्ती झलामली गांव के ग्रामीणों को आचार्यप्रवर का पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू, शराब आदि के सेवन का परित्याग किया। आचार्यवर १२ कि.मी. का विहार करते हुए वागड़ पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से वागड़ में अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। श्रद्धालुओं के हृदय में आस्था का सैलाब-सा उमड़ रहा था। आचार्यवर का प्रवास श्री देवीलाल चुण्डावत के निवास पर रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय महिला मंडल ने गीत के माध्यम से पूज्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। श्री सुरेश जैन और ज्योति संचेती ने पूज्यचरणों में भाव-सुमन अर्पित किए। बालिका दृष्टि ओस्तवाल ने

बाल सुलभ भावों की प्रस्तुति दी। पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्रीरतनलाल जाट और सहाड़ा क्षेत्रीय विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी ने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यक्ति को दूर से ही पाप का वर्जन कर लेना चाहिए। इस संदर्भ में संबोधि के ग्यारहवें अध्याय में सुन्दर व्यावहारिक उदाहरण दिया गया। जैसे जंगल में सियार आदि पशु शेर से डरते हुए दूर रहते हैं, वैसे ही व्यक्ति धर्म को समझकर पापभीरू रहता हुआ पापों से दूर रहे। अन्य किसी से डरे अथवा न भी डरे, किन्तु पाप से डरना चाहिए। पाप चित्त को मलिन बनाने वाला होता है। कोई भी कार्य छिपकर नहीं करना चाहिए। छिपकर किए गए कार्य में गलत होने की संभावना ज्यादा रहती है। व्यक्ति दूसरों से भले स्वयं को छिपा ले, किन्तु वह कर्म से बच नहीं सकता।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'शरीर तो मिट्टी है, एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा। हर प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है। पैसा और पद नहीं, धर्म और पुण्य-पाप व्यक्ति के साथ जाते हैं। इस नश्वर शरीर से यथासंभव धर्म की साधना करें, भ्रूण हत्या, आत्महत्या, परहत्या, व्यभिचार, चोरी, झूठ आदि पापकारी प्रवृत्तियों से बचें। पापों को निकट न आने दें। यदि पापभीरूता का विकास हो जाता है तो यह जीवन तो अच्छा बनता ही है, आगे भी सद्‌गति मिलने की संभावना बन जाती है।' आचार्यवर ने प्रवचन के मध्य स्वरचित गीत 'हे प्रभो! तुम ही हमारे नाथ हो...' का भी संगान किया। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने पूज्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

वागड़ में १५ तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर उनके घरों में पधारे। इस दौरान पूज्यवर ने स्थानीय तेरापंथ भवन में भी कुछ क्षण विराजकर 'प्रभो! यह तेरापंथ महान्...' गीत का संगान किया। श्रद्धालुओं को आचार्यवर की निकट उपासना का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। इस दौरान लोगों ने पूज्यवर से विविध संकल्प ग्रहण किए।

धर्म से बढ़ता है आत्मबल

८ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः वागड़ से ५.४ कि.मी. का विहार कर साकरड़ा पधारे। मेवाड़ यात्रा में पूज्यवर ने राजसमन्द और भीलवाड़ा जिले का अनेक बार स्पर्श किया। आज भी पूज्यवर मार्ग में भीलवाड़ा जिले से पुनः राजसमन्द जिले में पधारे। आचार्यवर का स्वागत कर साकरड़ा के आबालवृद्ध हर्षविभोर थे। सर्वत्र खुशहाली का वातावरण था। पूज्यप्रवर का प्रवास श्री सुन्दरलाल हिरण के आवास पर रहा। आमेट प्रवासी हिरण परिवार के लिए आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह किसी वरदान से कम नहीं था। पूरा परिवार मानों खुशियों के सागर में गोते लगा रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के उपरान्त श्री भैंरूलाल हिरण, श्री सुन्दरलाल हिरण, श्री मांगीलाल हिरण, श्री रतनलाल हिरण, श्री भावेश हिरण और श्रीमती भगवतीदेवी हिरण ने अपने आस्थासिक्त विचार व्यक्त किए। पूर्व ए.डी.एम. प्रभुदानजी चारण और एस.डी.एम श्री चावण्डदानजी चारण ने आचार्यप्रवर के स्वागत में भावपूर्ण उद्‌गार अभिव्यक्त किए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। आमेट निवासी श्री कन्हैयालाल चिंपड़ ने वागड़ और उसके समीपवर्ती गांव में अणुव्रत जल निकासी परियोजना प्रारंभ करने की घोषणा की।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'महापुरुषों की सन्निधि स्वर्ग का अहसास कराती है। आज साकरड़ा में दिव्य आभामंडल वाले महापुरुष का समागमन हुआ है। जहां आभामंडल पवित्र होता है, वहां जाति, सम्प्रदाय आदि का भेद नहीं रहता। यही कारण है कि पूज्यवर की सन्निधि में आने वाला हर व्यक्ति धन्यता की अनुभूति करता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि इस भौतिक युग में अध्यात्म का अमृत बांटने वाले गुरु के सुखद साये में रह रहे हैं।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में संबोधि के ग्यारहवें अध्याय में उल्लिखित श्लोक को उद्धृत करते हुए कहा 'जब-जब धर्म घटता है, तब-तब मनुष्यों का आत्मबल भी कमजोर हो जाता है। धर्म के साथ आत्मबल का गहरा सम्बन्ध है। पवित्रता जितनी वृद्धिंगत होती है, चैतसिक बल भी उतना ही वृद्धि

को प्राप्त होता है। अपेक्षा इस बात की है कि समाज, राज्य और विश्व में धर्म को गौण न किया जाए।' धर्म के दो रूपों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'सामायिक, जप आदि उपासनात्मक धर्म है और चोरी, झूठ, परस्त्रीगमन आदि का परित्याग आचरणात्मक धर्म है। उपासनात्मक धर्म अच्छा है, किन्तु उसके साथ आचरणात्मक धर्म भी रहना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--जहां निष्ठुरता, हिंसा, आक्रोश आदि हैं, वहां अधर्म है और जहां पवित्र अहिंसा की भावना है, वहां धर्म है। दुनिया में अहिंसा की भावना परिपुष्ट बने। अहिंसा परम धर्म है। व्यक्ति उसे आत्मसात् करने का प्रयास करे। केवल मारना ही हिंसा नहीं है, किसी को प्रताड़ित करना, कटुवचन बोलना और किसी का अनिष्ट चिन्तन करना भी हिंसा है। अहिंसा सत्य आदि जीवनगत बन जाते हैं तो आत्मबल विकसित हो सकता है। यदि आत्मबल कमजोर होता है तो कठिनाइयों को झेलना दुष्कर हो जाता है। इसके विपरीत सुदृढ़ आत्मबल वाला व्यक्ति कठिनाइयों को प्रसन्नता से सह सकता है। आत्मबल के विकास के लिए धर्म को आत्मसात् करें।' पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प भी कराया। स्थानीय महिलाओं ने आचार्यवर से भ्रूणहत्या को प्रश्रय न देने का संकल्प स्वीकार किया।

साकरड़ा में तेरह तेरापंथी परिवार हैं। पूज्यप्रवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात् अपनी चरणरज से उनके घरों को पावन किया। रात्रि में श्रद्धालुओं को आचार्यप्रवर ने समुपासना का अवसर भी प्रदान किया। लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

मोखुन्दा में उमड़ा जनसैलाब

६ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः साकरड़ा से मोखुन्दा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती सिरोड़ी गांव में आचार्यवर से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। टुंगच गांव में स्थान-स्थान पर ग्रामीणों की टोलियां पूज्यवर के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहीं थी। आचार्यवर की प्रेरणा से कई लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। यहां जैनेतर समाज के अनेक घर भी पूज्यवर की पदरज के स्पर्श से पावन बने। टुंगच का खेड़ा में भी स्वागत में खड़े गांववासियों को पूज्यवर का पावन पाथेय संप्राप्त हुआ। अनेक व्यक्तियों ने नशामुक्त बनने का संकल्प अभिव्यक्त किया। पूज्यवर आज पुनः भीलवाड़ा जिले में पधारे। इस जिले के खाखरमाला गांव के सैंकड़ों ग्रामीणों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यवर ने उन्हें अपना संक्षिप्त संबोध भी प्रदान किया।

पूज्यवर मोखुन्दा के बाहर की ओर स्थित मुनि मिश्रीमलजी के समाधि स्थल की ओर पधारे, किन्तु हरियाली के कारण दूर से ही मंगलपाठ का उच्चारण कर पुनः विहार पथ पर पधार गए। पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर गांव के प्रवेश पर श्री फतेहलाल पितलिया परिवार द्वारा नवनिर्मित महाश्रमण द्वार का लोकार्पण जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने किया।

मोखुन्दा में पूज्यवर के स्वागत में जनसैलाब उमड़ पड़ा। उस सैलाब में तेरापंथी, जैन और जैनेतर किसी प्रकार का भेद करना दुरूह था। मानों भक्ति का दरिया लहरा रहा था। सर्वत्र अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। आचार्यवर भव्य स्वागत जुलूस के मध्य स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पधारे। इस प्रकार आचार्यवर १०.७ कि.मी. का विहार कर श्री लादूलाल पोखरणा परिवार के निवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। परिवार का हर सदस्य पूज्यप्रवर के प्रवास का सौभाग्य प्राप्त कर आह्लादित था।

आचार्यवर के प्रवास स्थल पर पधारने के कुछ क्षणों पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ समुपस्थित हुई। पथ की प्रतिकूलता के कारण पूज्यवर के निर्देशानुसार महाश्रमणीजी दो दिनों तक पृथक् विहार कर पधारी थी। उनका ७ जनवरी का प्रवास बोराणा और ८ जनवरी का प्रवास रायपुर में रहा। श्रद्धालुओं ने इस प्रवास का पूरा लाभ उठाया। महाश्रमणीजी ने भी दोनों क्षेत्रों की अच्छी संभाल की।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मोखुन्दा तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद् ने संगीत स्वरों से आराध्य का अभिनंदन किया। श्री मुकेश गुगलिया और श्री अर्जुन पितलिया ने श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किए। शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी और मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने विचाराभिव्यक्ति के उपरान्त आगम मनीषी मुनि दुलहराजजी की कृति 'मेरी प्रिय कथाएं' की प्रथम प्रति पूज्यप्रवर के करकमलों में उपहृत की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने संबोधि आधारित अपने पावन प्रवचन में विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए कहा--'जब प्राणी की दृष्टि सम्यक् हो जाती है, यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो जाता है और आचार समीचीन होता है, तब धर्म वर्धमान होता है। आचार प्रथम धर्म है। कोई विद्वान् हो या नहीं, आचारनिष्ठ अवश्य होना चाहिए। व्यक्ति जीवन में अत्याचार, दुराचार, कदाचार, भ्रष्टाचार से दूर रहकर सम्यक् ज्ञान और श्रद्धा के साथ सदाचार का अनुपालन करे तो आत्मा के उत्थान का पथ प्रशस्त हो सकता है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'आगम मनीषी मुनि दुलहराजजी स्वामी की कृति भेंट की गई। वे एक बहुश्रुत मुनि थे। अध्यापन, प्रेरणा देना और आगम का कार्य आदि किया करते थे। उनके सहवर्ती शासनश्री मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी और मुनि जितेन्द्रकुमारजी अच्छे संत हैं, अच्छा कार्य करने वाले हैं।'

नालायक को लायक बना देते हैं

आज के कार्यक्रम में महाश्रमणीजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'हम आज पुनः गुरुसन्निधि में आए हैं। आचार्यवर के निर्देश पर दो दिन के लिए बोराणा और रायपुर गए, वहां रहे। आचार्यश्री के आचार्य बनने के बाद कल प्रथम दिन था, जब हमने गुरुदर्शन किए बिना आहार किया। इन दो दिनों में सब कुछ होने के बावजूद भी ऐसा लगा कि कुछ खाली है, कुछ छूट गया है। किसी ने ठीक ही कहा है--

गगन पर नखत तारे हैं, धरा पर दीप जलते हैं।
मगर मन की अंधेरी में, सभी निस्तेज लगते हैं ॥

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में साध्वीप्रमुखाजी का द्विदिवसीय पृथक् विहार का उल्लेख करते हुए कहा हालांकि अभी साध्वीप्रमुखाजी का पृथक् विहार कराना नहीं था, किन्तु मार्ग की असमीचीनता ने ऐसा करने के लिए विवश कर दिया। हम तो देखकर आए हैं, वह मार्ग साधन के अनुकूल नहीं था, साध्वीप्रमुखाजी के लायक नहीं था। हम तो चल लेते हैं, मार्ग लायक हो अथवा कैसा भी, पार कर लेते हैं। (पूज्यप्रवर के प्रवचन के मध्य साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया--'आचार्यप्रवर नालायक को लायक बना देते हैं।' उनके इस कथन को सुनकर पूज्यप्रवर सहित पूरी सभा मुस्करा उठी) पूज्यवर ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा--साध्वीप्रमुखाजी का हमारे पास रहना अच्छा है। एक अनुभवी और प्रौढ़ साध्वीप्रमुखा हैं। साध्वीप्रमुखा का अपना महत्त्व भी होता है।

मोखुन्दा में साठ से अधिक तेरापंथी परिवार हैं। सांयकालीन आहार के पश्चात् आचार्यप्रवर ने पचास से अधिक जैन और जैनेतर समाज के घरों का स्पर्श किया।

जिलोला में एकदिवसीय प्रवास

१० जनवरी। परमाराध्य आचार्यवर प्रातः मोखुन्दा के प्रवास स्थल से जिलोला की ओर प्रस्थित हुए। प्रवास स्थल के समीपवर्ती रेगर मोहल्ले के निवासियों को पूज्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प अभिव्यक्त किया। आचार्यप्रवर का सभी अवशिष्ट श्रद्धालुओं के घरों में पदार्पण हुआ। इस दौरान अन्य जैन और जैनेतर समाज के लोगों को भी अपने घरों में पूज्यचरणों के स्पर्श का सौभाग्य संप्राप्त हुआ।

इस प्रकार शताधिक घरों का स्पर्श करते हुए पूज्यप्रवर सुन्दर बेन गोकुलचन्द मेहता चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री मल्लिनाथ हॉस्पीटल में पधारे। हॉस्पीटल के निकट आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर प्रतीक्षालय का उद्घाटन किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री शिवलाल पोखरना आदि पदाधिकारियों ने हॉस्पीटल परिसर में पूज्यचरण का स्वागत करते हुए हॉस्पीटल के विषय में अवगति दी। हॉस्पीटल के आचार्यश्री महाप्रज्ञ स्मृति आयुर्वेद चिकित्सा विभाग के विषय में बताया गया कि आचार्य महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के बाद ट्रस्ट ने उनकी स्मृति चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से इसे स्थापित किया है।

संक्षिप्त कार्यक्रम में डॉ. मनीष जैन ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। पूज्यवर ने श्रीमज्जयाचार्य

द्वारा रचित चौबीसी के मल्लिनाथ स्तुति गीत का संगान करते हुए कहा--'उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लिनाथ मां के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके नाम से जुड़े हुए इस अस्पताल में शारीरिक चिकित्सा होती है, साथ में आध्यात्मिक चिकित्सा भी चले। पोखरणा परिवार में धर्म के संस्कार बने रहें और यहां आने वालों को मल्लिनाथ के नाम से अध्यात्म की प्रेरणा मिलती रहे।'

पूज्यवर हॉस्पीटल के अवलोकन और संक्षिप्त कार्यक्रम के पश्चात् पुनः जिलोला की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती राजकीय कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना करते हुए पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। मार्ग में नरेगा के अंतर्गत कार्यरत ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शनकर स्वयं को धन्य बनाया। आचार्यवर ने उन्हें नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ७.१ कि.मी. का विहार कर जिलोला पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से जिलोला के श्रद्धालुओं का उल्लास चरम पर था। उनके प्रसन्न वदन पर आन्तरिक श्रद्धा का ज्वार उमड़ता-सा प्रतीत हो रहा था। पूज्यप्रवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

आज प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनि सुमेरमलजी, शासनश्री मुनि सुखलालजी आदि ग्यारह संत पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनि की अगवानी की। इस अवसर पर शासनश्री मुनि सुखलालजी आदि मुनियों की गीत प्रस्तुति के अनंतर मंत्री मुनिश्री ने गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी और कहा--'आपश्री के श्रम की आचार संहिता बननी चाहिए।' मंत्री मुनि ने साध्वीप्रमुखाश्री से ऐसी आचार संहिता बनाने का अनुरोध किया तो उन्होंने कहा 'यह काम तो मंत्री का है।' आचार्यवर ने कहा--'८ दिसम्बर के बाद आज १० जनवरी को मंत्री मुनिश्री के दर्शन प्राप्त हुए हैं। मुझे इसकी सात्त्विक प्रसन्नता है। मुनिश्री का वैसे साथ में रहना अच्छा है, पर कई बार स्वास्थ्य, कार्य आदि की दृटि से पृथक रहना पड़ जाता है।'

शुभ भविष्य के लिए सोचें

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के पश्चात् श्री मिश्रीमल चौधरी ने आराध्य के स्वागत में विचार व्यक्त किए। सिसोदा चतुर्मास परिसम्पन्न कर गुरुचरणों में पहुंचे मुनि तत्त्वरुचिजी ने अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया। गोगुन्दा चतुर्मास के पश्चात् गुरुदर्शन करने वाले मुनि जम्बूकुमारजी (सर.) ने अपने भावों को काव्यस्वरों में प्रस्तुति दी। उनके सहवर्ती मुनि स्वस्तिककुमारजी ने संस्कृत श्लोकों के द्वारा पूज्यवर की अभ्यर्थना की। मुनि प्रसन्नकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

मंत्रीमुनि सुमेरमलजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'जहां आचार्यप्रवर के चरण टिकते हैं, मानों वहां जन्म-जन्मान्तरों के मंगल समाहित हो जाते हैं। आचार्यवर अपनी इस यात्रा में कठोर परिश्रम कर रहे हैं। आपके श्रम की हम क्या गरिमा गाएं। हम साधु-साध्वियों के लिए तो यह एक बोध है कि एक-एक परिवार की संभाल के लिए भी आचार्यवर कितना श्रम करते हैं। इतना श्रम करने के बाद भी चेहरे पर मुस्कान वैसे ही बनी रहती है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने आपको महातपस्वी से संबोधित किया, वह सार्थक है। ऐसे नेतृत्व को पाकर गौरव से सीना फूलता है। जैन इतिहास आपके इस कठोर परिश्रम को युगों-युगों तक याद करता रहेगा।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में भक्त और भगवान में अन्तर बताते हुए आचार्यवर के कठोर परिश्रम को सफलता के शिखर पर आरोहण का मार्ग बताया।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हर प्राणी का जीवन बीतता जा रहा है, यह काल का नियम है। व्यक्ति यह सोचे कि मैं वर्तमान और भविष्य के लिए क्या कर रहा हूं। यहां तो मानव हैं, अग्रिम गति क्या होगी? वृद्धावस्था में तो विशेष रूप से अगली गति को अच्छा बनाने के लिए चिन्तन और पुरुषार्थ करना चाहिए। गृहस्थ को अपरिग्रह, अनशन और साधुत्व को ग्रहण करने के लिए निरन्तर चिन्तनशील रहना चाहिए।'

आध्यात्मिक साहित्य के दो शब्दों (यम और नियम) का उल्लेख करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'आध्यात्मिक दृटि से इन दोनों शब्दों का बड़ा महत्त्व है। यम निरन्तर अनुष्ठानीय होते हैं। नियमों की साधना कभी-कभी

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

की जाती है। हिंसा, असत्य आदि से उपरत होना यम है। यम की पूर्णतया साधना महाव्रत और आंशिक साधना अणुव्रत है। कषाय की मंदता हो तो यमों की साधना अच्छी हो सकती है। इसलिए क्रोध आदि चारों कषायों को प्रतनु बनाकर यमों की साधना करते हुए अपने इस जीवन और अगली गति को प्रशस्त बनाएं।' आचार्यवर ने अपने प्रवचन में प्रसंगवश तेरापंथ की पूर्ववर्ती आचार्य परम्परा का पावन स्मरण भी किया।

पूज्यप्रवर ने समागत मुनिवृन्द के लिए कहा--' मुनि तत्त्वरूचिजी अच्छे वक्ता हैं, प्रेक्षाध्यान आदि का कार्य करने वाले हैं, वे स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अच्छा कार्य करते रहें। मुनि जम्बूकुमारजी (सर.) तत्त्वज्ञान और इतिहास की अच्छी रुचि रखते हैं। इनके सहवर्ती मुनि स्वस्तिककुमारजी अच्छे वैरागी मुनि हैं। खूब अच्छा विकास करते रहें।' पूज्यप्रवर ने जिलोला के उपासक मिश्रीलालजी चौधरी की सेवाओं का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जिलोला में तेरापंथ समाज के तेरह घर हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात् पूज्यप्रवर उनके घरों में पधारे। रात्रि में श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर की उपासना का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आचार्यप्रवर द्वारा नवीन घोषणाएं

- दिनांक २ फरवरी को आमेट में समायोज्य दीक्षा समारोह में मुमुक्षु ज्योति (तुषरा) को साध्वी दीक्षा देने का भाव है।
- सिवांची-मालाणी में प्रवास के दौरान असाडा में दीक्षा समारोह करने का भाव है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/ स्व. श्रीमती मोहनीदेवी चोरड़िया (धर्मपत्नी स्व. श्री मोहनलालजी चोरड़िया, सुजानगढ़) की पुण्य स्मृति में उनकी सुपुत्री श्रीमती कमला बोकड़िया (धर्मपत्नी स्व. श्री सुमेरमलजी बोकड़िया) दोहित्र मनोज-मंजू बोकड़िया किशनगंज (विहार) द्वारा प्रदत्त।

२१००/ शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के ऊमरी पधारने के उपलक्ष्य में श्रीमती कांताबेन-मदनलाल, श्रीमती इंदू-मनीषकुमार, रुची, यशवंत, सीपी नंगावत ऊमरी, जामनगर गुजरात द्वारा प्रदत्त।

२१००/ स्व. मूलचन्दजी भंसाली (सुपुत्र स्व. जेसराजजी भंसाली, गंगाशहर) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गवरादेवी सुपुत्र बिमलकुमार, कनक, दीपक सुपौत्र चिराग भंसाली सिलचर गुवाहाटी द्वारा प्रदत्त।

२१००/ स्व. श्रीमती भंवरदेवी कोठारी (धर्मपत्नी श्री भीमराजजी कोठारी, उदयपुर) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र दिनेश, अरविन्द, मनोज सुपौत्र प्रतीक, दिव्य, काव्य कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/ चि. अमित (सुपौत्र श्री घेवरचन्द-कमलादेवी बैद, नोखा) सह सौ. रेखा (सुपुत्री श्री हस्तीमलजी श्री श्रीमाल) के शुभ विवाहोपलक्ष्य एवं तरूणकुमार के चार्टेड एकाउन्टेड बनने पर भंवरलाल, रूपचन्द, ललित बैद परिवार नोखा द्वारा प्रदत्त।

संपर्क के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट
पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

•

प्रकाशन दिनांक : १४-१-२०१२

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**